यूपी में गांवों का भी विकास : केशव

लखनऊ, विशेष संवाददाता। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा है कि प्रदेश सरकार का लक्ष्य यूपी के गांवों का शहरों की तरह संतुलित विकास करने की है।

आज गांवों में नल से जल पहुंचाया जा रहा है, हर घर को पहले ही बिजली दी जा चुकी है, गरीबों को पक्का आवास देने के साथ ही गांवों में चिकित्सा व शिक्षा की गुणवत्ता सुधारी जा रही है। उन्होंने कहा है कि ग्रीन टेक्नालाजी के क्षेत्र में राज्य को नई ऊंचाई पर ले जाने की दिशा में काम किया जा रहा है।

उप मुख्यमंत्री ने बुधवार को उत्तर प्रदेश ग्रामीण सड़क विकास अभिकरण में मिशन लाइफ के तहत सड़कों के

डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने बुधवार को मिशन लाइफ की कार्यशाला को संबोधित किया।

निर्माण में ग्रीन-न्यू टेक्नालॉजी पर आयोजित कार्यशाला में ये बातें कहीं। कार्यशाला में राज्यमंत्री विजय लक्ष्मी गौतम, ग्राम्य विकास आयुक्त जीएस प्रियदर्शी, यूपीआरआरडीए के सीईओ सुखलाल भारती के साथ ही 17 राज्यों के प्रतिनिधि शामिल थे। केशव ने कहा कि गांवों का संतुलित विकास हो। यह विकास पर्यावरण के अनुकूल हो। तालाव व नाले को ध्यान में रखते हुए सड़कों का तथा अन्य निर्माण किए जाएं।

सड़क बनाने में गिट्टी व डीजल बचा रही एफडीआर तकनीक

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : मिशन लाइफ अभियान के तहत उत्तर प्रदेश में एफडीआर (फुल डेप्थ रिक्लमेशन) तकनीक से निर्मित किए जा रहे ग्रामीण मार्ग पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ संसाधनों की बचत का भी बड़ा माध्यम बन रहे हैं। प्रदेश में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत एफडीआर तकनीक से बन रहे 5400 किलोमीटर मार्ग में लगभग 86 लाख क्यूबिक मीटर गिट्टी और इसी के सापेक्ष परिवहन में करीब 650 लाख लीटर डीजल की बचत का आकलन किया गया है। बुधवार को मिशन लाइफ के तहत सड़क निर्माण में ग्रीन टेक्नोलाजी के उपयोग पर आयोजित कार्यशाला में यह आंकड़े साझा किए गए। उत्तर प्रदेश ग्रामीण सड़क विकास अभिकरण सभागार में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने किया। पहले दिन कार्यशाला में 17 राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थिति रहे।

केशव प्रसाद मौर्य (फाइल फोटो)

- 5400 किमी सड़क निर्माण में 86 लाख क्यूबिक मीटर गिट्टी की बचत होगी तकनीक के प्रयोग से
- उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद ने सड़क निर्माण में ग्रीन टेक्नोलाजी के उपयोग पर दिया जोर

उपमुख्यमंत्री ने प्रतिनिधियों से कहा कि वह सड़कों निर्माण में एफडीआर तकनीक के अलावा ऐसे शोधपरक कार्य करें, जिससे पर्यावरण व जल संरक्षण को बढ़ावा मिले। उत्तर प्रदेश ग्रीन टेक्नोलाजी को अपनाने में अग्रणी है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 5400 किलोमीटर (684 मार्ग) निर्माण का कार्य एफडीआर तकनीक पर किया जा रहा है, जिससे सापेक्ष 900 किलोमीटर निर्माण पूरा हो चुका है। उन्होंने गांवों के संतुलित व समग्र विकास के लिए ग्रामीण सड़कों के किनारे दीर्घकालीन प्रजातियों के पौधे लगाने का सुझाव दिया। इससे मिशन लाइफ अभियान को गति मिलेगी।

राज्यमंत्री विजय लक्ष्मी गौतम ने कहा कि एफडीआर तकनीक से बनी सड़कों की गुणवत्ता बेहतर होती है। कार्यशाला में ग्राम्य विकास आयुक्त जीएस प्रियदर्शी, यूपीआरआरडीए के मुख्य कार्यपालक अधिकारी सुखलाल भारती समेत अन्य ने प्रस्तुति दी। कार्यशाला में असम, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, लद्दाख, महाराष्ट्र, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, ओडिशा, पंजाब, तमिलनाडु, तेलंगाना, त्रिपुरा व उत्तराखंड के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

क्या है एफडीआर तकनीक

एफडीआर तकनीक में अलग से गिट्टी (एग्रीगेट) का प्रयोग नहीं किया जाता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन नहीं होता है। पर्यावरण के अनुकूल इस तकनीक से बनीं सड़कों की लागत अपेक्षाकृत कम होती है और यह सड़कें अधिक टिकाऊ भी होती हैं। 5 .5 मीटर चौड़े मार्ग के निर्माण में प्रति किलोमीटर लगभग 2500 क्यूबिक मीटर (140 बड़े ट्रक) गिट्टी की बचत होती है। एफडीआर तकनीक से कार्बन फुट प्रिंट को कम किया जा रहा है।

मिशन लाइफ अभियान को गति देने में, सड़कों के निर्माण की एफडीआर तकनीक साबित हो रही उपयोगी व कारगरः केशव प्रसाद मौर्य

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि गांवों के संतुलित व समग्र विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आयाम यह भी है कि ग्रामीण सड़कों के किनारे दीर्घकालीन प्रजातियों के पौधे रोपित किए जाएं ,इससे मिशन लाइफ अभियान को गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में पीएमजीएसवाई की सड़कों के निर्माण में अपनायी जा रही एफडीआर (फूल डेप्थ रिक्लमेशन) तकनीक, मिशन लाइफ अभियान के लिए लाभप्रद व उपयोगी सिद्ध हो रही है। श्री केशव प्रसाद मौर्य आज उत्तर प्रदेश ग्रामीण सड़क विकास अभिकरण, (गन्ना संस्थान) में मिशन लाइफ के अंतर्गत ग्रीनध् न्यू टेक्नोलॉजी पर आधारित कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। कार्यशाला में विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों का उन्होंने आह्वान किया कि वह सड़कों के निर्माण में एफडीआर तकनीक के अलावा और अधिक ऐसे शोधपरक कार्य करें, जिससे पर्यावरण व जल संरक्षण को बढ़ावा मिले। कहा कि पीएमजीएसवाई की सड़कों के निर्माण में एफ डी आर तकनीक को अपनाने मे उत्तर प्रदेश लीड कर रहा है।उन्होंने कहा कि सड़कों का डिजाइन इस प्रकार से किया जाए कि आवागमन की सुविधा के साथ-साथ पर्यावरण की अनुकूलता के दृष्टिकोण से भी लाभकारी सिद्ध हों। उन्होंने कहा कि किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के कार्य में पर्यावरण संरक्षण हमारी प्राथमिकता में होना चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश ग्रीन टेक्नोलॉजी को अपनाने में अग्रणी है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत 5400 किलोमीटर(684 मार्ग) के निर्माण का कार्य ग्रीन टेक्नोलॉजीध्एफडीआर तकनीक पर किया जा रहा है, जिससे सापेक्ष 900 किलोमीटर निर्माण पूरा हो चुका है। इस तकनीक में अलग से गिट्टी (एग्रीगेट) का प्रयोग नहीं किया जाता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों का दोहन नहीं होता है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में 5400 किलोमीटर एफडीआर के तहत पीएमजीएसवाई मार्गों के निर्माण में लगभग 86 लाख क्यूबिक मीटर गिट्टी तथा इसके सापेक्ष ट्रांसपोर्टेशन में 650 लाख लीटर फ्यूल की बचत आंकलित की गयी है।

मिशन लाइफ– 2023 के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश अंतर्राज्यीय स्थल निरीक्षण एवं हरित नवीन

प्रौद्योगिकी अभियान हेतु डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने दीप प्रज्वलन कर कार्यशाला का किया शुभारंभ

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2022–2027 की अवधि में पर्यावरण के संरक्षण में जनभागिता सुनिश्चित किये जाने के उद्देश्य से षमिशन लाईफ कार्यक्रम को विकसित किया गया है, जिसके अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में पीएमजीएसवाई अन्तर्गत ग्रीन ध् न्यू टैक्नोलॉजी रू फुल डेप्थ रिक्लमेशन

तकनीक पर निर्माणाधीन परियोजना के भ्रमण एवं तकनीक के सम्बन्ध में दिनांक 21.11.2023 को साईट विजिट (अमेठी जनपद) एवं दिनांक 22.11. 2023 को ग्रीन टैक्नोलॉजी के प्रस्तुतीकरण हेतु 02 दिवसीय अन्तर्राज्यीय कार्यक्रम आयोजित किया गया है, जिसमें 17 राज्यों असम, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, लद्दाख, महाराष्ट्र, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, उडीसा, पंजाब, तमिलनाडू तेलंगाना, त्रिपुरा, उत्तराखण्ड के प्रतिनिधि प्रतिभाग कर रहे हैं। उक्त के अतिरिक्त एन०आर०आई०डी०ए०, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशक, आई० जाईण्टी० पटना, एच०बी०टी०यू० कानपुर, आई०ई०टी० लखनऊ एवं के०एन०आई०टी० सुल्तानपुर के प्रोफेसर षमिशन लाईफ कार्यक्रमष् में प्रतिभाग कर रहे हैं। भारत सरकार की अपेक्षानुसार उत्तर प्रदेश सरकार सदैव ग्रीन टैक्नोलॉजी को अपनाने में अग्रणी है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अन्तर्गत प्रदेश में लगभग 5400 किमी0 (684 मार्ग) का निर्माण कार्य ग्रीन टैक्नोलॉजी रू फुल डेप्थ रिक्लेमेशन (एफ० डी०आर०) पर किया जा रहा है, जिसके सापेक्ष लगभग 900 किमी० मार्ग निर्माण पूर्ण किया जा चुका है। फुल डेप्थ रिक्लमेशन टैक्नोलॉजी में अलग से गिट्टी (एग्रीगेट) का प्रयोग नहीं किया जाता है, जिसके कारण प्राकृतिक एवं राष्ट्रीय संसाधनों का दोहन नहीं हो रहा है। 5.5 मीटर कैरेजवे मार्ग के निर्माण में प्रति किमी0 लगभग 2500 क्यूबिक मीटर (140 बड़े ट्रक्स) की बचत होती है। एफ०डी०आर० टैक्नोलॉजी में बने भागों की गुणवत्ता भी कन्वेंशनल तकनीक से बने मार्गों की अपेक्षा उत्तम है तथा पेस ऑफ कन्स्ट्रक्शन भी स्पीडी है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से निर्मित हो रहे एफ०डी०आर० तकनीक के मार्गों में सभी हाई ऐन्ड मशीनरी – रिसाईक्लर, पी०एल०सी० कन्ट्रोल्ड सीमेन्ट स्प्रेडर, 20–22 टन पैडफुट रोलर, स्वॉयल कॉम्पैक्टर एवं पी०टी०आर० का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे 100 प्रतिशत कॉम्पैक्शन प्राप्त किया जा सके एवं उच्च गुणवत्ता के पीएमजीएसवाई ग्रामीण मार्ग बनाये जा सके। बिटुमिनस कॉन्क्रीट लेईंग का कार्य शामी लेयर (जतमैइवतइपदह उमउइतंदम पदजमतसंलमत) के साथ किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में 5400 किमी0 एफ०डी०आर० के तहत पीएमजीएसवाई मार्गों के निर्माण में लगभग 86 लाख (छियासी लाख) क्यूबिक मीटर गिट्टी (।हहतमहंजम) तथा इस एग्रीगेट के सापेक्ष ट्रान्सपोर्टेशन में 650 लाख (छः सौ पचास लाख) लीटर पयूल की बचत आंकलित की गयी है। इस प्रकार एफ०डी०आर० तकनीक से कार्बन फुट प्रिन्ट को कम किया जा रहा है तथा यह तकनीक पर्यावरण के अनुकूल (म्दअपतवदउमदजंस थ्तपमदकसल) है। उक्त के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश द्वारा एफ०डी०आर० तकनीक की ट्रेनिंग एवं वर्कशॉप लगभग 15 राज्यों को दी जा चुकी है एवं उत्तर प्रदेश की लगभग 70 कन्स्ट्रक्शन फर्मों द्वारा भी न्यू ध् ग्रीन टैक्नोलॉजी पर कार्य करने की दक्षता हासिल की जा चुकी है। एन०आर०आई० डी०ए०, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशक, आई०आई०टी० पटना, एच०बी०टी०यू० कानपुर, आई०ई०टी० लखनऊ एवं के०एन०आई०टी० सुल्तानपुर के प्रोफेसर एवं 17 राज्यों से आये हुये अधिकारीगण एवं अभियन्तागण द्वारा ग्रीन ध् न्यू टैक्नोलॉजी पर किये जा रहे अन्य कार्यो से उत्तर प्रदेश को भी अवगत करायें जिससे ग्रीन ध् न्यू टैक्नोलॉजी के अन्य आयामों पर भी कार्य किया जा सके।

तरक्की पुरानी गिट्टी के उपयोग से बन रही सड़कों से 25 फीसदी कम हो गई लागत

देश के लिए मॉडल बनी अमेठी में बन रही इको फ्रेंडली दो सड़कें

- एफडीआर तकनीक से बन रही सड़कों को देखकर तिलोई से लखनऊ वापस हुआ 150 अभियंताओं का दल
- आज लखनऊ में होगी अभियंता दल की कांफ्रेंस

विश्ववार्ता संवाददाता

अमेठी। ग्रामीण विकास मंत्रालय की ओर से मिशन लाइफ कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में फुल डेप्थ रिक्लेमेशन -नयी तकनीकी से तिलोई विधानसभा में बनाई जा रही दो सड़के अब देश के लिए माडल बनेगी। सड़कों की नयी तकनीकी को जानने और समझाने के लिए मंगलवार को सरायमोहना और पीढ़ी मे अठारह राज्यों के अभियंता जमा हुए।अब नयी गिट्टी के अभाव में सड़कों का निर्माण बाधित नहीं होगा,पहाड़ कम टूटेंगे । प्रदूषण की समस्या कम होगी,ट्रांसपोर्टेशन पर व्यय कम होगा। जर्जर और जीर्णशीर्ण सड़कों की गिट्टी का बेस मैटेरियल के रूप में दुबारा अच्छा उपयोग हो रहा है। जिले मे लगभग 70किमी लम्बाई में इको फ्रेंडली तकनीक से सड़कों का निर्माण हो चुका है।

तिलोई विधानसभा में सरायमोहना से अलापुर तक की सड़क की लम्बाई 10.05किमी है। पीढ़ी से ओनडीह तक सड़क की लम्बाई 5.60मी है। नवीन तकनीक से निर्मित की जा रही सड़कों के निर्माण को देखने और निर्माण विधि को समझने के लिए मंगलवार को उत्तर और दक्षिण के 18राज्यों के अभियंताओं का बड़ा दल दिन भर अमेठी में रहा।साइट पर जाकर स्थलीय भ्रमण किया और तकनीक समझने के बाद शाम को वापस लखनऊ गया है।उत्तर प्रदेश में 5400किमी लम्बाई में सरकार नवीन तकनीक से सड़कों का निर्माण करा रही है।इस तकनीक से निर्माण लागत 25फीसदी कम हो गई है। मंगलवार को यू पी आर आर डी ए के डी डी पाठक ,सी आर आर आई के मुख्य वैज्ञानिक मनोज कुमार शुक्ला और मोर्ड के निदेशक के एस सिंह के साथ अभियन्ताओं के दल ने साइट पर जाकर तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी ली।

पुरानी गिट्टी से बन रही है नई सड़क

आरईएस के अधिशासी अभियंता ने बताया कि नवीन तकनीक में नयी पत्थर की गिट्टी का उपयोग नहीं किया जाता।सड़कों की पुरानी गिट्टी को सीमेंट और एडिटिव के साथ बड़ी मशीन में पोलराइज करके एक मजबूत बेस तैयार किया जाता है।एक पेविंग फैब्रिक को बिटुमिन के साथ चिपका कर बिटुमिनस कंक्रीट का लेपन किया जाता है।अधिशासी अभियंता गौरव सिंह ने बताया कि लोक निर्माण विभाग के कई अभियंता सरकार के नये प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं।

इस तकनीक में सबसे अधिक फायदा यह है कि नये पत्थरों की खुदाई नहीं करानी पड़ती पर्यावरण को चोट नहीं पहुंचती,कम कास्ट लगता है।इन सड़कों में जिओ सिंथेटिक का सेमीलेन भी प्रयोग किया जाता है,जो क्रैकों को बचाने और सड़कों को पानी के कारण खराब होने से बचाता है।

शुभम पटेल
सहायक अभियंता
आरईडी, अमेठी

कम लागत में बनाई जा रही सड़क, 70 किलोमीटर सड़क बनाकर प्रदेश में प्रथम नंबर पर अमेठी

सड़क निर्माण को देखने पहुंचे 18 राज्यों के इंजीनियर

क्या है एफडीआर तकनीक

मिशन लाइफ– 2023 के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश अंतर्राज्यीय स्थल निरीक्षण एवं हरित नवीन

प्रौद्योगिकी अभियान हेतु डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने दीप प्रज्वलन कर कार्यशाला का किया शुभारंभ

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2022–2027 की अवधि में पर्यावरण के संरक्षण में जनभागिता सुनिश्चित किये जाने के उद्देश्य से ष्मिशन लाईफ कार्यक्रम को विकसित किया गया है, जिसके अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में पीएमजीएसवाई अन्तर्गत ग्रीन ६ न्यू टैक्नोलॉजी रू फुल डेप्थ रिक्लमेशन तकनीक पर निर्माणाधीन परियोजना के भ्रमण एवं तकनीक के सम्बन्ध में दिनांक 21.11.2023 को साईट विजिट (अमेठी जनपद) एवं दिनांक 22.11. 2023 को ग्रीन टैक्नोलॉजी के प्रस्तुतीकरण हेतु 02 दिवसीय अन्तर्राज्यीय कार्यक्रम आयोजित किया गया है, जिसमें 17 राज्यों असम, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, लद्दाख, महाराष्ट्र, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, उडीसा, पंजाब, तमिलनाडू तेलंगाना, त्रिपुरा, उत्तराखण्ड के प्रतिनिधि प्रतिभाग कर रहे है। उक्त के अतिरिक्त एन०आर०आई०डी०ए०, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशक, आई० जाईण्टी० पटना, एच०बी०टी०यू० कानपुर, आई०ई०टी० लखनऊ एवं के०एन०आई०टी० सुल्तानपुर के प्रोफेसर ष्मिशन लाईफ कार्यक्रम० में प्रतिभाग कर रहे हैं। भारत सरकार की अपेक्षानुसार उत्तर प्रदेश सरकार सदैव ग्रीन टैक्नोलॉजी को अपनाने में अग्रणी है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अन्तर्गत प्रदेश में लगभग 5400 किमी0 (684 मार्ग) का निर्माण कार्य ग्रीन टैक्नोलॉजी रू फुल डेप्थ रिक्लेमेशन (एफ० डी०आर०) पर किया जा रहा है जिसके सापेक्ष लगभग 900 किमी० मार्ग निर्माण पूर्ण किया जा चुका है। फुल डेप्थ रिक्लमेशन टैक्नोलॉजी में अलग से गिट्टी (एग्रीगेट) का प्रयोग नहीं किया जाता है, जिसके कारण प्राकृतिक एवं राष्ट्रीय संसाधनों का दोहन नहीं हो रहा है। 5.5 मीटर कैरेजवे मार्ग के निर्माण में प्रति किमी0 लगभग 2500 क्यूबिक मीटर (140 बड़े ट्रक्स) की बचत होती है। एफ०डी०आर० टैक्नोलॉजी में बने भागों की गुणवत्ता भी कन्वेंशनल तकनीक से बने मार्गों की अपेक्षा उत्तम है तथा पेस ऑफ कन्स्ट्रक्शन भी स्पीडी है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से निर्मित हो रहे एफ०डी०आर० तकनीक के मार्गो में सभी हाई ऐन्ड मशीनरी – रिसाईक्लर, पी०एल०सी० कन्ट्रोल्ड सीमेन्ट स्प्रेडर, 20–22 टन पैडफुट रोलर, स्वॉयल कॉम्पैक्टर एवं पी०टी०आर० का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे 100 प्रतिशत कॉम्पैक्शन प्राप्त किया जा सके एवं उच्च गुणवत्ता के पीएमजीएसवाई ग्रामीण मार्ग बनाये जा सके। बिटुमिनस कॉन्क्रीट लेईंग का कार्य शामी लेयर (जतमे ईवतइपदह उमउइतंदम पदजमतसंलमत) के साथ किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में 5400 किमी0 एफ०डी०आर० के तहत पीएमजीएसवाई मार्गों के निर्माण में लगभग 86 लाख (छियासी लाख) क्यूबिक मीटर गिट्टी (।हहतमहंजम) तथा इस एग्रीगेट के सापेक्ष ट्रान्सपोर्टेशन में 650 लाख (छः सौ पचास लाख) लीटर पयूल की बचत आंकलित की गयी है। इस प्रकार एफ०डी०आर० तकनीक से कार्बन फुट प्रिन्ट को कम किया जा रहा है तथा यह तकनीक पर्यावरण के अनुकूल (स्दअपतवदउमदजंस थ्तपमदकसल) है। उक्त के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश द्वारा एफ०डी०आर० तकनीक की ट्रेनिंग एवं वर्कशॉप लगभग 15 राज्यों को दी जा चुकी है एवं उत्तर प्रदेश की लगभग 70 कन्स्ट्रक्शन फर्मों द्वारा भी न्यू ६ ग्रीन टैक्नोलॉजी पर कार्य करने की दक्षता हासिल की जा चुकी है। एन०आर०आई० डी०ए०, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशक, आई०आई०टी० पटना, एच०बी०टी०यू० कानपुर, आई०ई०टी० लखनऊ एवं के०एन०आई०टी० सुल्तानपुर के प्रोफेसर एवं 17 राज्यों से आये हुये अधिकारीगण एवं अभियन्तागण द्वारा ग्रीन ६ न्यू टैक्नोलॉजी पर किये जा रहे अन्य कार्यो से उत्तर प्रदेश को भी अवगत करायें जिससे ग्रीन ६ न्यू टैक्नोलॉजी के अन्य आयामों पर भी कार्य किया जा सके।